एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.)— भारत में अध्यापक शिक्षा का रूपांतरण

शरद सिन्हा*

भारत में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव के रूप में एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) को पेश किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, यह कार्यक्रम पारंपरिक शिक्षक प्रशिक्षण मॉडलों से हटकर एकीकृत और बहु-विषयक दृष्टिकोण को अपनाता है। यह शोधपत्र आई.टी.ई.पी. की उत्पत्ति, औचित्य, प्रमुख विशेषताएँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ इसका संरेखण, कार्यान्वयन प्रक्रिया, सामने आने वाली चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह लेख भारत में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे सुधारों के प्रयासों की जानकारी प्रदान करता है साथ ही और शैक्षिक गुणवत्ता पर इसके संभावित प्रभावों को भी उजागर करता है। इस लेख के माध्यम से एकीकृत अध्यापक शिक्षा (आई.टी.ई.पी.) पाठ्यक्रम के बारे में विद्यार्थियों और अभिभावकों के मन में उठ रहे प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश की गई है, ताकि इस कोर्स को समझने और तदनुसार अपनाने के लिए निर्णय लेने में सहूलियत हो।

शिक्षक की गुणवत्ता प्रशिक्षु शिक्षक की उपलब्धि को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण विद्यालय-आधारित कारक बनी हुई है (डार्लिंग-हैमंड, 2017)। इस महत्वपूर्ण संबंध को पहचानते हुए, भारत ने एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) पाठ्यक्रम के माध्यम से अपनी शिक्षक शिक्षा प्रणाली में सुधार करने की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा शुरू की है। जैसा कि पांडा (2022) ने व्यक्त किया है, "अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता सीधे शिक्षकों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, जो बदले में प्रशिक्षु शिक्षकों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है"। आई.टी.ई.पी. भारत की शिक्षक शिक्षा प्रणाली में लगातार आ रही चुनौतियों का एक रणनीतिक जवाब है, जिसमें विखंडन, सिद्धांत और अभ्यास का अपर्याप्त एकीकरण, और बहु-विषयक ज्ञान पर अपर्याप्त जोर शामिल है (एन.सी.टी.ई., 2021)।

आई.टी.ई.पी. की अवधारणा को भारत के शैक्षिक परिदृश्य में कई नीतिगत विचार-विमर्श और सुधार पहलों से जोड़ा जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा

**आचार्य एवं अध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

नीति (1986) और उसके बाद के संशोधनों ने व्यापक शिक्षक शिक्षा सुधारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। हालाँकि, आई.टी.ई.पी. की अनुशंसा सर्वप्रथम पूर्ववर्ती न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा आयोग (2012) ने की थी, जिसने भारत में शिक्षक शिक्षा की व्यापक समीक्षा की और महत्वपूर्ण प्रणालीगत कमियों की पहचान की (वर्मा आयोग रिपोर्ट, 2012)। आयोग ने एकीकृत कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया जो विषय सामग्री, शिक्षाशास्त्रीय ज्ञान और व्यापक व्यावहारिक अनुभव के एक साथ अध्ययन की पेशकश करते हैं (कुमार और सारंगपाणि, 2021)।

इन सिफारिशों के आधार पर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत में शिक्षक तैयारी के लिए 4 वर्षीय आई.टी.ई.पी. मॉडल को प्राथमिकता देने का स्पष्ट प्रस्ताव दिया (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.) ने शिक्षक शिक्षा को विनियमित करने के लिए एक वैधानिक निकाय के रूप में आई.टी.ई.पी. के कार्यान्वयन के लिए विस्तृत ढाँचा विकसित किया (एन.सी.टी.ई., 2021)। इसके अतिरिक्त, एन.सी.टी.ई. ने आई.टी.ई.पी. की पाठ्यचर्या की रूपरेखा भी तैयार की जो शिक्षक शिक्षा के गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

आई.टी.ई.पी. और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020— संरेखण और दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट रूप से आई.टी.ई.पी. को शिक्षक शिक्षा सुधार की आधारशिला के रूप में देखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अनुभाग 15.4 कहता है—“2030 तक, शिक्षण के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता एक 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री होगी जो ज्ञान सामग्री और शिक्षाशास्त्र की एक शृंखला सिखाती है और स्थानीय विद्यालयों में प्रशिक्षु शिक्षक -शिक्षण के

आई.टी.ई.पी. में एकीकृत शिक्षण चक्र

1	2	3	4
विषयवस्तु सीखें	**शिक्षाशस्त्र सीखें**	**एकीकृत शिक्षण**	**प्रतिपुष्टि प्राप्त करें**
शिक्षार्थी विषयवस्तु का ज्ञान प्राप्त करते हैं।	शिक्षार्थी शिक्षण विधियाँ के बारें में समझ बनातें हैं।	शिक्षार्थी विषयवस्तु और शिक्षाशास्त्र को समेकित करने के महत्व एवं तरीके समझते हैं	शिक्षार्थी सुधार एवं संवर्धन के लिए प्रतिपुष्टि (फीडबैक) प्राप्त करते हैं।

रूप में मजबूत व्यावहारिक प्रशिक्षण शामिल है”। (शिक्षा मंत्रालय, 2020)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह भी निर्देशित करती है कि यह एकीकृत डिग्री बहु-विषयक संस्थानों द्वारा प्रदान की जाएगी और विद्यालयी शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता बन जाएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आई.टी.ई.पी. को बहु-विषयक उच्च शिक्षा के अपने व्यापक दृष्टिकोण के भीतर स्थापित करता है, यह जोर देते हुए कि अध्यापक शिक्षा को बहु-विषयक इनपुट और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और शिक्षाशास्त्र की आवश्यकता होती है (पांडा और गर्ग, 2022)।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कई सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है जो आई.टी.ई.पी. कार्यान्वयन का मार्गदर्शन करते हैं—

- **शिक्षक सशक्तीकरण**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों को केवल सूचना के प्रसारकों के बजाय सीखने की सुविधा प्रदान करने वालों के रूप में तैयार करने पर जोर देती है।
- **सांस्कृतिक उत्तरदायित्व**— यह पाठ्यक्रम भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का सम्मान करने वाली संदर्भित शिक्षक तैयारी के महत्व पर जोर देता है।
- **निरंतर व्यावसायिक विकास**— यद्यपि आई.टी.ई.पी. सेवा-पूर्व शिक्षा पर केंद्रित है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसे आजीवन पेशेवर विकास की नींव के रूप में देखती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)।

आई.टी.ई.पी. का औचित्य

पारंपरिक शिक्षक तैयारी में सुधार

पारंपरिक एक वर्षीय बी.एड. मॉडल, जिसमें स्नातक डिग्री के बाद प्रवेश लिया जाता है, ने विषय ज्ञान और शिक्षाशास्त्रीय प्रशिक्षण के बीच एक कृत्रिम अलगाव की स्थिति निर्मित की है। जैसा कि रामचंद्रन (2021) ने उल्लेख किया है, ‘वर्तमान अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की क्रमिक प्रकृति अक्सर विषय ज्ञान और शिक्षाशास्त्रीय तैयारी के बीच एक कृत्रिम अलगाव पैदा करती है।’ इसके अतिरिक्त, यह भी महसूस किया

आई.टी.ई.पी. और एन.ई.पी. 2020 का संरेखण

गया है कि शिक्षा क्षेत्र में होने वाले नवाचारों की समझ विकसित करने के लिए एक वर्ष या दो वर्ष की तैयारी पर्याप्त नहीं हो सकती। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी शिक्षा क्षेत्र में नवाचारों के महत्व की अनुशंसा की गई है।

गुणवत्ता संबंधी चिंताएँ

वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (असर) सहित कई अध्ययनों और रिपोर्टों ने शिक्षक की गुणवत्ता और तैयारी पर गंभीर चिंताएँ व्यक्त की हैं (असर सेंटर, 2019)। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.स.) के परिणामों ने यह भी संकेत दिया है कि प्रशिक्षु शिक्षकों के सीखने के परिणामों में अंतराल, आंशिक रूप से शिक्षक तैयारी की अपर्याप्तताओं के कारण उत्पन्न होता है (रा.शै.अ.प्र.प., 2021)।

वैश्विक रुझान

उच्च प्रदर्शन वाली शिक्षा प्रणालियों वाले देशों में तेजी से एकीकृत शिक्षक शिक्षा मॉडलों को अपनाया जा रहा है। फिनलैंड, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया जो शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं। शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों को लागू करते हैं जो उच्च शिक्षा की शुरुआत से ही विषय ज्ञान, शिक्षाशास्त्रीय प्रशिक्षण और व्यापक प्रैक्टिकल अनुभवों को एकीकृत करते हैं (*मैकिन्से रिपोर्ट*, 2022)। इन देशों में इन कार्यक्रमों की अवधि लंबी होती है और ये अपने कठिन प्रशिक्षण में गंभीर व प्रभावशाली प्रयासों के लिए भी जाने जाते हैं।

शिक्षण का व्यावसायीकरण—

सिंह (2023) का तर्क है कि भारत में शिक्षण पेशे को कमतर सामाजिक स्थिति और 'फॉलबैक करियर' के रूप में देखा जाता है। आई.टी.ई.पी. शिक्षक शिक्षा को एक गंभीर और पहली पसंद वाले पेशे के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है जिसके लिए विशेष और कठोर तैयारी की आवश्यकता है। इसके साथ ही, यह शिक्षक को भविष्यवादी शिक्षा परिदृश्य के लिए तैयार करता है।

समग्र शिक्षक विकास

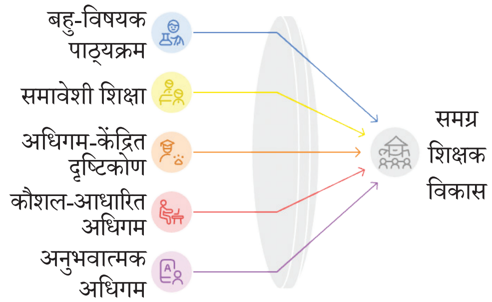

इन पाँच प्रमुख घटकों के सम्मिलन से एक संवेदनशील, दक्ष और प्रभावशाली शिक्षक का निर्माण होता है, जो हर प्रकार के बच्चे की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं को समझकर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के अवसर दे सकते हैं।

आई.टी.ई.पी. की प्रमुख विशेषताएँ

एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) एक नवीन 4-वर्षीय पाठ्यक्रम है जो स्नातक डिग्री और बी.एड. को एक साथ जोड़ता है, जिससे विषय विशेषज्ञता और शिक्षक प्रशिक्षण का एकीकृत विकास संभव होता है। यह कार्यक्रम बहु-विषयक दृष्टिकोण, भारतीय ज्ञान परंपराओं, पर्यावरणीय शिक्षा, कला और सांस्कृतिक संदर्भों को समाहित कर शिक्षकों को अधिक संवेदनशील और सक्षम बनाता

है। इसमें विस्तारित प्रायोगिक अनुभवों (प्रैक्टिकम) के तहत स्कूलों में चरणबद्ध व्यावहारिक अनुभव, डिजिटल साक्षरता का समावेश, और विभिन्न स्कूली स्तरों के लिए प्रारंभिक विशेषज्ञता की सुविधा भी प्रदान की गई है, जिससे यह कार्यक्रम समकालीन और व्यावहारिक है।

एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) कई नवीन विशेषताओं को समाहित करता है, जो इसे पारंपरिक शिक्षक शिक्षा मॉडलों से अलग और अधिक प्रभावी बनाते हैं—

संरचनात्मक एकीकरण

आई.टी.ई.पी. एक चार वर्षीय एकीकृत (बी.ए.-बी.एड., बी.एससी.-बी.एड. या बी.कॉम.-बी.एड.) कार्यक्रम है, जो विषय विशेषज्ञता और शिक्षक शिक्षा को समवर्ती रूप से विकसित करता है (एन.सी.टी.ई., 2021)। यह मॉडल पारंपरिक स्नातक डिग्री के बाद किए जाने वाले बी.एड. कार्यक्रम से भिन्न है और शिक्षण पेशे में प्रारंभिक चरण से ही दक्षता निर्माण को बढ़ावा देता है।

बहु-विषयक दृष्टिकोण

यह कार्यक्रम बहु-विषयक संस्थानों में संचालित किया जाता है, जिससे प्रशिक्षु शिक्षक अपने विषय एवं शिक्षा के क्षेत्र से परे व्यापक ज्ञान से परिचित होते हैं। यादव (2022) के अनुसार, 'इस प्रकार का बहु-विषयक एक्सपोजर ऐसे शिक्षकों को तैयार करता है जो केवल विषय-विशेषज्ञ नहीं, बल्कि शिक्षार्थियों के समग्र विकास में भी सहायक होते हैं'।

विस्तारित प्रैक्टिकम

आई.टी.ई.पी. में विद्यालय-आधारित अनुभव को विशेष महत्व दिया गया है। चार वर्षों में कक्षा अवलोकन से लेकर स्वतंत्र शिक्षण तक व्यावसायिक अनुभव क्रमिक रूप से बढ़ता है, जिससे प्रशिक्षु शिक्षकों में शैक्षिक आत्मविश्वास और व्यावहारिक दक्षता का विकास होता है (एन.सी.टी.ई. पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क, 2021)।

भारतीय ज्ञान परंपराओं का समावेश

इस कार्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणालियों, भाषाओं, पर्यावरणीय शिक्षा और कलाओं को एकीकृत किया गया है, जिससे सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी और संवेदनशील शिक्षाशास्त्र को बढ़ावा मिलता है (शिक्षा मंत्रालय, 2020; 2022)। यह कौशल-आधारित और अनुभवात्मक अधिगम की दिशा में एक सशक्त कदम है।

प्रौद्योगिकी का एकीकरण

आई.टी.ई.पी. डिजिटल साक्षरता, शैक्षिक तकनीकों और प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षण विधियों पर विशेष जोर देता है, जिससे प्रशिक्षु शिक्षक 21वीं सदी की कक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप दक्ष बनते हैं (भाटिया, 2023)।

प्रारंभिक विशेषज्ञता

यह कार्यक्रम प्रशिक्षु शिक्षकों को किसी एक विशिष्ट विद्यालयी स्तर (जैसे— आधारभूत, तैयारी, मध्य या माध्यमिक) में प्रारंभिक विशेषज्ञता प्राप्त करने का अवसर देता है। इससे वे विभिन्न आयु समूहों के विकासात्मक संदर्भों में बेहतर शिक्षण के लिए विशेष रूप से तैयार हो पाते हैं (एन.सी.टी.ई., 2021)।

इन विशेषताओं के माध्यम से आई.टी.ई.पी. न केवल एकीकृत दृष्टिकोण को मूर्त रूप देता है, बल्कि शिक्षक शिक्षा को अधिक व्यावसायिक, बहु-आयामी और संवेदनशील बनाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षक शिक्षा किसी भी समावेशी और न्यायपूर्ण शिक्षा व्यवस्था की नींव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (शिक्षा मंत्रालय, 2020) के अंतर्गत विकसित एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) पारंपरिक दो वर्षीय बी.एड. जैसे असंबद्ध कार्यक्रमों के स्थान पर एक चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री प्रदान करता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को बाल्यावस्था से लेकर माध्यमिक स्तर तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए तैयार करना है।

पाठ्यचर्या की रचना एवं संरचना

आई.टी.ई.पी. की पाठ्यचर्या बहु-विषयक, समावेशी और अधिगम-केंद्रित दृष्टिकोण पर आधारित है। इसमें शिक्षा, मनोविज्ञान, भाषाएँ, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा जीवन कौशल जैसे विषयों का आधारभूत और उन्नत अध्ययन शामिल है, जो शिक्षक प्रशिक्षुओं के समग्र विकास को सुनिश्चित करता है (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, 2021)।

शिक्षाशास्त्रीय नवाचार

आई.टी.ई.पी. का जोर संरचनावादी और चिंतनशील शिक्षाशास्त्र पर है, जहाँ जिज्ञासा-आधारित अधिगम, समस्या-समाधान, समूह-कार्य और शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाता है (शर्मा, 2021)। यह कार्यक्रम शिक्षार्थियों में विषयगत-शिक्षण ज्ञान विकसित करता है, जिससे वे विषयवस्तु को प्रभावी ढंग से पढ़ाने की क्षमता प्राप्त करते हैं साथ ही, इसमें समावेशी शिक्षा और प्रशिक्षु शिक्षकों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप विभेदित निर्देशन को भी विशेष महत्व दिया गया है।

शिक्षण की पद्धति

आई.टी.ई.पी. में शिक्षण अनुभव आधारित, संवादात्मक और प्रौद्योगिकी समर्थित होता है। इसमें माइक्रो-टीचिंग, सहपाठी अवलोकन, अनुकृति आधारित प्रशिक्षण, आत्म-चिंतन डायरी और पोर्टफोलियो मूल्यांकन जैसी नवाचारी पद्धतियाँ शामिल हैं। इस कार्यक्रम में शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं, जिससे शिक्षण प्रक्रिया भागीदारीपूर्ण, आलोचनात्मक और आत्मनिरीक्षण पर आधारित बनती हैं। साथ ही, सामुदायिक सहभागिता और क्षेत्रीय अनुभव प्रशिक्षु शिक्षकों को शिक्षा की सामाजिक-सांस्कृतिक समझ विकसित करने में मदद करते हैं।

इंटर्नशिप और स्कूल इमर्शन

आई.टी.ई.पी. की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका चरणबद्ध स्कूल-आधारित इंटर्नशिप मॉडल है। यह पूरे चार वर्षों में सम्मिलित है—

- **प्रारंभिक फील्ड विजिट** (प्रथम–तृतीय सेमेस्टर)— अवलोकन, सहायक भूमिकाएँ और समुदाय से जुड़ाव।
- **मध्यकालीन इंटर्नशिप** (चतुर्थ–सप्तम सेमेस्टर)— पाठ योजना, शिक्षण अभ्यास, मूल्यांकन और कक्षा प्रबंधन।

- **समापन इंटर्नशिप** (अष्टम सेमेस्टर)— पूर्णकालिक शिक्षण, चिंतनशील अभ्यास और कार्य अनुसंधान (एन.सी.टी.ई., 2021)।
- यह दीर्घकालिक और क्रमबद्ध प्रशिक्षण, प्रशिक्षु-शिक्षक और शिक्षकों को वास्तविक कक्षा स्थितियों के लिए तैयार करता है (कुमार एवं सक्सेना, 2022)।

विषयवस्तु और शिक्षण का एकीकरण

आई.टी.ई.पी. में विषय और शिक्षाशास्त्र को एकीकृत रूप में पढ़ाया जाता है, जिससे शिक्षार्थी यह सीखते हैं कि क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है। उदाहरण के लिए—

- गणित के साथ गणित शिक्षण की विधियाँ पढ़ाई जाती हैं।
- भाषा शिक्षण में भाषा अधिग्रहण सिद्धांत, ध्वनिविज्ञान और पठन-लेखन की विधियाँ शामिल होती हैं।
- सामाजिक विज्ञान के शिक्षाशास्त्र में नागरिक शिक्षा, संवाद आधारित शिक्षण और सामाजिक न्याय के मुद्दे समाहित हैं (शिक्षा मंत्रालय, 2020)।

यह समन्वय पुराने शिक्षा मॉडलों की उस कमजोरी को दूर करता है जिसमें विषय और शिक्षण अलग-अलग सिखाए जाते थे।

विषय और क्रेडिट संरचना

आई.टी.ई.पी. का ढाँचा क्रेडिट आधारित प्रणाली पर आधारित है, जो राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (एन.सी.एफ.) के अनुरूप है। पूरे चार वर्षों (8 सेमेस्टर) में कुल 160–170 क्रेडिट निर्धारित हैं (एन.सी.टी.ई., 2021), जो इस प्रकार विभाजित हैं—

- **शिक्षा संबंधी आधारभूत पाठ्यक्रम**— 30–35 क्रेडिट
- **मुख्य विषय पाठ्यक्रम**— 60–65 क्रेडिट
- **शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम**— 40–45 क्रेडिट
- **क्षेत्रीय अनुभव एवं इंटर्नशिप**— 20–25 क्रेडिट

आई.टी.ई.पी के चरणबद्ध

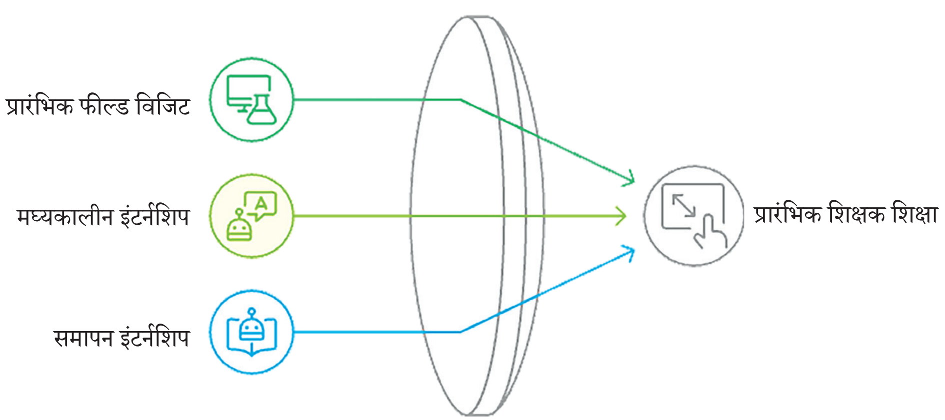

आई.टी.ई.पी. क्रेडिट वितरण

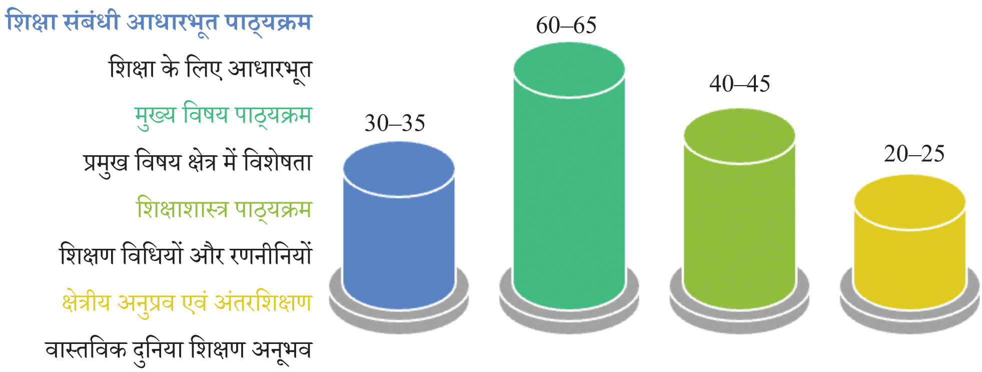

इस ढाँचे में चयनात्मक पाठ्यक्रम, विषय विशेषज्ञता और नई शैक्षिक थीम (जैसे समावेशी शिक्षा, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, शैक्षिक नेतृत्व) की सुविधा भी दी गई है।

आई.टी.ई.पी. का पाठ्यक्रम बहु-विषयक, समावेशी और अधिगम-केंद्रित है। इसमें शिक्षा और मनोविज्ञान, भाषाएँ, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं जीवन कौशल जैसे विषयों में मूलभूत और उन्नत अध्ययन शामिल हैं। यह भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.), पर्यावरण शिक्षा और कला प्रशंसा को भी एकीकृत करता है, जिससे शिक्षकों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके। यह कार्यक्रम पारंपरिक ज्ञान-आधारित मॉडल से कौशल-आधारित और अनुभवात्मक अधिगम की ओर बदलाव को महत्व देता है।

आई.टी.ई.पी. में शिक्षण अनुभव-आधारित, संवादात्मक और प्रौद्योगिकी-समर्थित होता है। इसमें सूक्ष्म शिक्षण, सहपाठी अवलोकन, सिमुलेशन, आत्म-चिंतन डायरी और पोर्टफोलियो मूल्यांकन जैसी विधियों का उपयोग किया जाता है। शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं, जिससे

आई.टी.ई.पी. क्रेडिट वितरण

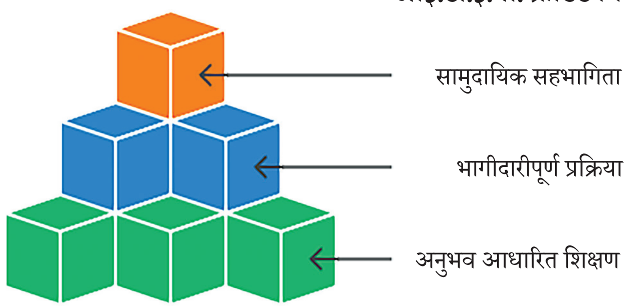

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया सहभागी, आलोचनात्मक और आत्म-परावर्तक बनती है। सामुदायिक सहभागिता और क्षेत्रीय कार्य अनुभव, प्रशिक्षु शिक्षक-शिक्षकों को शिक्षा पर सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करते हैं।

शिक्षक गुणवत्ता वृद्धि में आई.टी.ई.पी. का योगदान

आई.टी.ई.पी. कार्यक्रम से शिक्षक गुणवत्ता में कई स्तरों पर सुधार की अपेक्षा की जाती है। यह कार्यक्रम स्नातक स्तर से ही प्रशिक्षु शिक्षक को शिक्षक बनने की दिशा में मार्गदर्शन देता है, जिससे उनकी शिक्षण क्षमता को समय रहते पहचाना और निखारा जा सके। इसमें विषय और शिक्षण विधियों का एकीकृत अध्ययन होता है, जिससे सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल का समुचित संतुलन बनता है। विषय के गहन अध्ययन से शिक्षक मजबूत अकादमिक आधार बना पाते हैं, जो प्रशिक्षु शिक्षकों के सीखने की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। कार्यक्रम की लंबी अवधि उन्हें चिंतनशील शिक्षक बनने का अवसर देती है, जहाँ वे अपने अनुभवों पर विचार कर शिक्षण में सुधार ला सकते हैं। साथ ही, इसमें अनुसंधान पर भी जोर दिया गया है, जिससे शिक्षक नवाचार कर सकें और प्रमाण-आधारित शिक्षा पद्धतियाँ अपना सकें। आई.टी.ई.पी. से कई आयामों के माध्यम से शिक्षक गुणवत्ता में संवर्धन की अपेक्षा है।

शिक्षण योग्यता की प्रारंभिक पहचान और पोषण: स्नातक स्तर से प्रशिक्षु शिक्षकों को शिक्षक तैयारी में शामिल करके, आई.टी.ई.पी. शिक्षण योग्यता की प्रारंभिक पहचान की सुविधा प्रदान करता है और इसके विकास के लिए विस्तारित समय प्रदान करता है।

सिद्धांत और अभ्यास का एकीकरण— विषय सामग्री और शिक्षण विधियों का एक साथ अध्ययन, साथ ही स्कूलों में नियमित प्रशिक्षण (प्रैक्टिकम), आई.टी.ई.पी. में सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच मजबूत और सार्थक संबंध बनाता है। इससे प्रशिक्षु शिक्षक कक्षा में सिखाई जा रही बातों को वास्तविक स्थितियों में लागू करना सीखते हैं, जो उनके समग्र व्यावसायिक विकास में सहायक होता है।

विस्तृत विषय ज्ञान— शिक्षा पाठ्यक्रमों के साथ अनुशासनात्मक अध्ययन को जोड़कर, आई.टी.ई.पी. यह सुनिश्चित करता है कि होनहार शिक्षक शिक्षाशास्त्रीय विषय ज्ञान के साथ-साथ मजबूत विषय ज्ञान विकसित करें। शोध सिद्ध करते हैं कि शिक्षकों की विषय-वस्तु विशेषज्ञता महत्वपूर्ण रूप से प्रशिक्षु शिक्षक सीखने के परिणामों को प्रभावित करती है।

चिंतनशील अभ्यासकर्ता— आई.टी.ई.पी. की विस्तारित अवधि और एकीकृत डिजाइन प्रतिबिंबित अभ्यास के लिए कई अवसर प्रदान करते हैं। प्रशिक्षु शिक्षक-शिक्षक अपने विकासशील शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोणों पर निरंतर प्रतिबिंब में संलग्न होते हैं, जिससे स्कॉन (1983) द्वारा वर्णित 'एक्शन-इन-रिफ्लेक्शन' और 'रिफ्लेक्शन-ऑन-एक्शन' का समाधान होता है।

अनुसंधान अभिविन्यास— आई.टी.ई.पी. शैक्षिक अनुसंधान के तत्वों को शामिल करता है, ऐसे शिक्षकों को तैयार करता है जो प्रमाण-आधारित युक्तियों का प्रयोग कर सकते हैं और संभावित रूप से शिक्षाशास्त्रीय नवाचारों में योगदान दे सकते हैं (एन.सी.टी.ई. पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क, 2021)।

शिक्षक गुणवत्ता वृद्धि में आई.टी.ई.पी. का योगदान

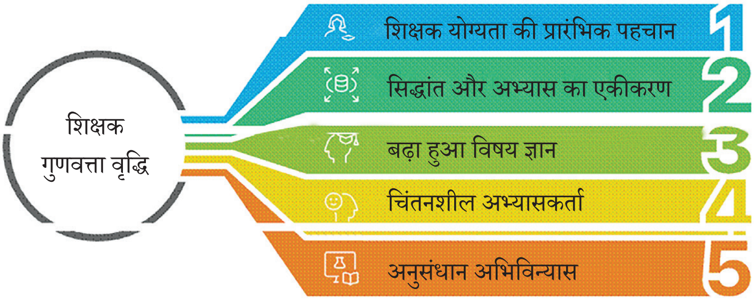

कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) को लागू करने में कुछ कठिनाइयाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती इसे ठीक से लागू करने की है, क्योंकि इसके लिए अच्छी योजना और समन्वय की जरूरत है। दूसरी समस्या यह है कि कई जगहों पर जरूरी संसाधन, जैसे— अनुभवी शिक्षक, प्रैक्टिकल के अवसर और मूलभूत सुविधाएँ, पूरी तरह से उपलब्ध नहीं हैं। इसके अलावा, पुराने ढंग से चल रहे शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रमों से जुड़े लोग इस नए बदलाव को अपनाने में हिचकिचा सकते हैं। इन सब कारणों से कार्यक्रम को सफल बनाना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

आशाजनक संरचना के बावजूद, आई.टी.ई.पी. की लंबी अवधि, विशेषज्ञता की, सीमित लचीलापन, रोजगार अनिश्चितता के साथ-साथ कई कार्यान्वयन चुनौतियों का सामना करता है, जैसे—

संस्थागत तैयारी— कई उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रभावी आई.टी.ई.पी. कार्यान्वयन के लिए आवश्यक बहु-विषयक संरचना और संकाय विशेषज्ञता का अभाव है। जैसा कि गांधी (2023) ने उद्धृत किया है, 'उच्च शिक्षा संस्थानों की मौजूदा साइलो (Silos) संरचना वास्तव में एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करने के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा प्रस्तुत करती है'।

संकाय तैयारी— प्रभावी आई.टी.ई.पी. कार्यान्वयन के लिए ऐसे प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है जो स्वयं एकीकृत दृष्टिकोण को अपनाकर उसका व्यवहार में उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। लेकिन वर्तमान में अधिकतर शिक्षक-प्रशिक्षक पारंपरिक प्रणाली से आए हैं, जिससे उनके लिए नई एकीकृत शिक्षण पद्धतियों को अपनाना चुनौतीपूर्ण होता है। इन विधियों में दक्षता प्राप्त करने के लिए उन्हें समय, अभ्यास और सोच में बदलाव की आवश्यकता होती है।

प्रैक्टिकम भागीदारी— आई.टी.ई.पी. के विस्तारित प्रैक्टिकम घटक के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए स्कूलों के साथ दीर्घकालिक और स्थायी साझेदारी आवश्यक होती है। हालाँकि, देशभर में इन सहयोगी संबंधों को स्थापित करना और बनाए रखना तार्किक और प्रशासनिक रूप से चुनौतीपूर्ण है। साथ ही, प्रशिक्षु शिक्षकों को उनके चुने गए विभिन्न विषयों के अनुसार

एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम

सकारात्मक बिंदु

1. एकीकृत दृष्टिकोण
एकीकृत दृष्टिकोण से शिक्षक-शिक्षा में सुधार और गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

2. बहु-विषयक ज्ञान
बहु-विषयक ज्ञान से शिक्षकों को व्यापक शिक्षा प्रदान करने में मदद मिलती है।

3. एन.ई.पी. 2020 के साथ संरेखण
एन.ई.पी. 2020 के साथ संरेखण से शिक्षा नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन होता है।

4. गुणवत्ता में सुधार
अध्यापक प्रशिक्षुओं की गुणवत्तापूर्ण तैयारी अच्छे परिणाम देती है।

5. व्यापक शिक्षा
व्यापक शिक्षा से शिक्षकों को विभिन्न विषयों का ज्ञान होता है।

संभावित चुनौतियाँ

1. लंबी अवधि
4 वर्षीय कार्यक्रम कुछ प्रशिक्षुओं लिए अधिक समय और वित्तीय प्रतिबद्धता की आवश्यकता हो सकती है।

2. विशेषज्ञता की कमी
कुछ आलोचकों का मानना है कि एकीकृत पाठ्यक्रम विषय-विशिष्ट विशेषज्ञता को कम कर सकता है।

3. सीमित लचीलापन
एक बार कार्यक्रम शुरू होने के बाद प्रशिक्षुओं के लिए अपना क्षेत्र या दिशा बदलना मुश्किल हो सकता है।

4. कार्यान्वयन की चुनौतियाँ
नई प्रणाली के रूप में, कई संस्थानों में उचित बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षित संकाय की कमी है।

5. रोजगार अनिश्चितता
नए प्रारूप के साथ, पहले बैचों के लिए नौकरी बाजार में स्वीकृति अनिश्चित हो सकती है।

उपयुक्त विद्यालयों में प्रतिनियुक्त करना भी एक बड़ी व्यावहारिक कठिनाई के रूप में सामने आता है।

मूल्यांकन सुधार— आई.टी.ई.पी. में अपेक्षित एकीकृत और समग्र सीखने का आकलन करने के लिए पारंपरिक मूल्यांकन दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं हैं। विषय ज्ञान और शिक्षण कौशल दोनों को मापने वाली प्रामाणिक मूल्यांकन विधियाँ विकसित करना एक बड़ी चुनौती है (धनकर, 2022)। इसके साथ ही, प्रशिक्षु शिक्षकों को इंटर्नशिप के दौरान इन नई मूल्यांकन तकनीकों का अभ्यास कराना भी एक जटिल और कठिन कार्य बना हुआ है।

नियामक जटिलताएँ— आई.टी.ई.पी. एक नवाचारी पहल है, अत: इसे क्रियान्वित करने हेतु एन.सी.टी.ई. और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सहित कई

नियामक निकायों के बीच नियमित आधार पर सक्रिय समन्वय की आवश्यकता होती है, जिससे संभावित रूप से प्रणालीगत जटिलताएँ उत्पन्न हो सकती हैं (कुमार, 2022)।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिरोध— भारत में शिक्षण अक्सर एक प्रतिष्ठित करियर विकल्प के रूप में नहीं माना जाता है, शिक्षक के बढ़ते कद के बावजूद यह सोच आई.टी.ई.पी. कार्यक्रमों में नामांकन को प्रभावित कर सकता है (एन.सी.टी.ई. स्टेटस रिपोर्ट, 2022)।

आई.टी.ई.पी. प्रशिक्षु शिक्षकों के लिए भविष्य की संभावनाएँ

आई.टी.ई.पी. का अध्ययन करने वाले प्रशिक्षु शिक्षक कई संभावित लाभों और अवसरों की उम्मीद कर सकते हैं—

पेशेवर लाभ— आई.टी.ई.पी. स्नातक पारंपरिक कार्यक्रमों से अपने साथियों की तुलना में अधिक व्यापक तैयारी के साथ शिक्षण पेशे में प्रवेश करेंगे, जिससे उन्हें रोजगार के अवसरो में संभावित रूप से प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिलेगी (पटेल, 2023)।

करियर में लचीलापन—आई.टी.ई.पी. की बहु-विषयक प्रकृति स्नातकों को कक्षा शिक्षण से परे लागू ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, जिसमें शैक्षिक प्रशासन, पाठ्यक्रम विकास और शैक्षिक प्रौद्योगिकी शामिल हैं (गुप्ता, 2022)। चूँकि ये एक ड्यूल डिग्री कार्यक्रम है, इसलिए प्रशिक्षु शिक्षक परास्नातक स्तर पर दो विषयों में योग्यता अर्जित कारण के पात्र हो सकते हैं।

अनुसंधान मार्ग— आई.टी.ई.पी. में निहित अनुसंधान अभिविन्यास स्नातकों को शिक्षा और संबंधित क्षेत्रों में उन्नत अध्ययन के लिए तैयार करता है। जैसा कि चौधरी (2023) ने देखा है, 'आई.टी.ई.पी. का अनुसंधान मूलभूत सिद्धांतों पर जोर शिक्षा शोधकर्ताओं की एक संभावित पाइपलाइन बनाता है जो व्यावहारिक शिक्षण अनुभव को अनुसंधान क्षमताओं के साथ जोड़ते हैं'। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुसंधान पर बल दिया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय मान्यता— वैश्विक स्तर पर अधिकाँश स्नातक कार्यक्रम चार वर्षीय होते हैं। जैसा कि भारत अपनी अध्यापक शिक्षा को वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ संरेखित करता है, आई.टी.ई.पी. को अधिक अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिल सकती है, जो संभावित रूप से वैश्विक गतिशीलता के लिए मार्ग खोल सकती है (शिक्षा मंत्रालय, 2023)। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय रोजगार के अवसर भी प्रशस्त होने की संभावना है।

नेतृत्व भूमिकाएँ— जैसे-जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कार्यान्वयन विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में आगे बढ़ता है, आई.टी.ई.पी. द्वारा प्रदान की गई व्यापक तैयारी स्नातकों को शैक्षिक नेतृत्व भूमिकाओं के लिए तैयार करती है।

शिक्षण का व्यावसायीकरण— जैसा कि सिंह तर्क देते हैं, 'भारत में शिक्षण पेशे को कम स्थिति और 'फॉलबैक करियर' के रूप में देखा गया है'। आई.टी.ई.पी. शिक्षण को एक सोच-समझकर पहली पसंद के पेशे के रूप में स्थापित करने की दिशा में सार्थक पहल है। अध्यापन के क्षेत्र में रुचि रखने एवं अध्यापन को ही भावी करियर विकल्प चुनने वाले ही इस कोर्स में दाखिला लेंगे, तथा प्रभावशाली शिक्षक बनेंगे, इस सोच को बल मिलता है।

अतः आई.टी.ई.पी. (एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम) शिक्षार्थियों के लिए एक समग्र और भविष्योन्मुखी शिक्षा का अवसर प्रदान करता है। यह कार्यक्रम न केवल उन्हें शिक्षण के क्षेत्र में गहन प्रशिक्षण और व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है, बल्कि शिक्षा से जुड़ी अन्य भूमिकाओं जैसे पाठ्यक्रम विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, प्रशासन और अनुसंधान में भी करियर के रास्ते खोलता है। इसकी बहु-विषयक संरचना शिक्षार्थियों को उच्च शिक्षा के विभिन्न विकल्पों जैसे एम.ए., एम.एड., एम.एस.डब्लू. आदि के लिए तैयार करती है। अंतर्राष्ट्रीय मानकों से मेल खाते हुए, यह डिग्री विदेशों में भी मान्यता प्राप्त कर सकती है, जिससे वैश्विक अवसर बढ़ते हैं। इसके अतिरिक्त, आई.टी.ई.पी. शिक्षण को एक गरिमापूर्ण और चुने हुए पेशे के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे योग्य और समर्पित शिक्षक तैयार होने की संभावना मजबूत होती है।

आई.टी.ई.पी. को विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की जागरूकता और चिंताएँ

चूँकि आई.टी.ई.पी. (एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम) के बारे में विद्यालय स्तर पर अभी पर्याप्त जागरूकता नहीं है, अतः इस विषय पर 52 विद्यार्थियों और 105 अभिभावकों से गूगल प्रश्नोत्तरी के माध्यम से आई.टी.ई.पी. के प्रति जागरूकता एवं उनसे जुड़ी चिंताओं के विषय में जानकारी एकत्र की गई। इस सर्वेक्षण के माध्यम से जो प्रमुख प्रश्न उभरकर सामने आए, वे निम्नलिखित हैं, जिन्हें मुख्यतः विद्यार्थी और अभिभावक जानना चाहते हैं। विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्न एवं उनके उत्तर इस प्रकार हैं—

प्रश्न	संक्षिप्त उत्तर
आई.टी.ई.पी. क्या है?	आई.टी.ई.पी. (एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम) एक 4 वर्षीय डिग्री है जो स्नातक की पढ़ाई और बी.एड. को एक साथ जोड़ती है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभ किया गया है।
आई.टी.ई.पी. में विद्यार्थी कौन-कौन से विषय चुन सकते हैं?	बी.ए. बी.एड. में हिंदी, अंग्रेजी, इतिहास, राजनीति विज्ञान आदि; बी.एससी. बी.एड. में गणित, भौतिकी, जीवविज्ञान आदि; बी.कॉम. बी.एड. में वाणिज्य विषय। विषय संस्थान पर निर्भर करते हैं।
क्या विद्यार्थी यह कोर्स बीच में छोड़ सकते हैं?	हाँ, मल्टिपल एंट्री-एग्जिट विकल्प है— 1 वर्ष— सर्टिफिकेट, 2 वर्ष— डिप्लोमा, 3 वर्ष— डिग्री, 4 वर्ष— डुअल डिग्री। बाद में पुनः प्रवेश भी संभव है।
आई.टी.ई.पी. के बाद मुझे कौन-कौन सी नौकरियाँ मिल सकती हैं?	शिक्षक (सरकारी/निजी), एजु-टेक कंपनियाँ, एन.जी.ओ., पाठ्यक्रम निर्माण, प्रकाशन, रिसर्च, करियर काउंसलर, और प्रतियोगी परीक्षाओं (सी.टी.ई.टी., टी.ई.टी., यू.पी. एस.सी.) में अवसर।
अगर मैं शिक्षक नहीं बनना चाहूँ तो क्या यह डिग्री उपयोगी है?	हाँ, शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों, जैसे— एजु-टेक, सामग्री विकास, प्रबंधन, शोध में उपयोगी। साथ ही यह एम.ए., एम.एड., एम.एस.डब्ल्यू. जैसे कोर्सों की पात्रता भी देती है।
क्या मैं इस कोर्स के बाद स्नातकोत्तर कर सकता/सकती हूँ?	हाँ, आप एम.एड., एम.ए. (Education), एम.ए./एम.एस.सी. (विषयानुसार), एम.एस. डब्ल्यू., एम.बी.ए., विशेष शिक्षा आदि में आगे पढ़ाई कर सकते हैं।

क्या यह कोर्स महँगा है?	फीस संस्थान पर निर्भर है— सरकारी संस्थानों में ₹15,000 – ₹50,000/वर्ष, निजी में ₹50,000 – ₹2,00,000/वर्ष तक। छात्रवृत्ति और ऋण की सुविधा उपलब्ध है।
क्या इसमें प्रैक्टिकल अनुभव मिलेगा?	हाँ, स्कूल इंटर्नशिप, कक्षा शिक्षण, शिक्षण सामग्री निर्माण, मूल्यांकन अभ्यास, फील्ड वर्क, प्रोजेक्ट आदि सभी वर्षों में शामिल हैं।

अभिभावकों द्वारा पूछे गए प्रश्न एवं उनके संभावित उत्तर इस प्रकार हैं—

प्रश्न	संक्षिप्त उत्तर
क्या आई.टी.ई.पी. को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है? क्या यह केवल सरकारी संस्थानों में उपलब्ध है?	हाँ, आई.टी.ई.पी. एन.सी.टी.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त है। यह केवल सरकारी नहीं, बल्कि मान्यता प्राप्त निजी संस्थानों में भी उपलब्ध है।
क्या कोर्स के बाद नौकरी की गारंटी है?	नहीं, कोई भी कोर्स नौकरी की गारंटी नहीं देता। नौकरी सी.टी.ई.टी./टी.ई.टी. व अन्य परीक्षाओं, योग्यता और रिक्तियों पर निर्भर करती है।
अगर कोर्स बीच में छोड़ दें तो क्या होगा?	मल्टिपल एंट्री-एग्जिट सिस्टम है— 1 वर्ष बाद सर्टिफिकेट, 2 वर्ष बाद डिप्लोमा, 3 वर्ष बाद डिग्री, 4 वर्ष बाद डुअल डिग्री मिलती है। अन्य कोर्स में ट्रांसफर भी संभव है।
क्या यह पुराने चार वर्षीय कोर्स से बेहतर है?	हाँ, आई.टी.ई.पी. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधारित आधुनिक, व्यावहारिक, बहु-विषयक और 21वीं सदी के कौशल से युक्त है।
क्या यह सरकारी नौकरी के लिए मान्य है?	हाँ, आई.टी.ई.पी. सरकारी शिक्षक पदों के लिए मान्य है। परंतु सी.टी.ई.टी./टी.ई.टी. जैसी परीक्षाएँ अभी भी अनिवार्य हैं।
क्या छात्रवृत्ति उपलब्ध है?	हाँ, एस.सी./एस.टी./ओ.बी.सी./ई.डब्ल्यू.एस. वर्ग हेतु सरकारी छात्रवृत्तियाँ, संस्थागत सहायता, शिक्षा ऋण आदि विकल्प उपलब्ध हैं।
क्या यह डिग्री सभी राज्यों में मान्य है?	हाँ, यह अखिल भारतीय स्तर पर मान्य है। कुछ राज्यों में स्थानीय टी.ई.टी., भाषा या पंजीकरण की आवश्यकता हो सकती है।
विदेश में इस डिग्री की क्या मान्यता है?	देश-विशेष पर निर्भर करता है। आमतौर पर शिक्षक लाइसेंस, आई.ई.एल.टी.एस./टी.ओ.ई.एफ.एल. व अंतर्राष्ट्रीय प्रमाणन (जैसे टी.ई.एफ.एल./टी.ई.एस.ओ.एल.) की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम भारत के शिक्षक तैयारी के दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण प्रतिमान बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। शिक्षक शिक्षा में लंबे समय से चले आ रहे विखंडन को संबोधित करके और एक बहु-विषयक, एकीकृत दृष्टिकोण को अपनाकर, आई.टी.ई.पी. शिक्षक गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए एक आशाजनक मार्ग प्रदान करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षिक परिवर्तन के लिए व्यापक दृष्टिकोण के साथ इसका संरेखण इसे प्रणालीगत सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण उत्तोलक के रूप में स्थापित करता है।

हालाँकि, सफल कार्यान्वयन के लिए संस्थागत क्षमता, संकाय तैयारी और नियामक समन्वय से संबंधित पर्याप्त चुनौतियों को संबोधित करने की आवश्यकता है। जैसा कि सारंगपाणि (2023) ने उचित रूप से निष्कर्ष निकाला है, 'आई.टी.ई.पी. की परिवर्तनकारी क्षमता केवल इसके संरचनात्मक डिजाइन में नहीं, बल्कि इसके कार्यान्वयन की गुणवत्ता और व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र में निहित है जो इसका समर्थन करता है'।

शिक्षण करियर पर विचार करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों के लिए, आई.टी.ई.पी. विस्तारित पेशेवर संभावनाओं के साथ एक अधिक सुसंगत, व्यापक तैयारी मार्ग प्रदान करता है। जैसे-जैसे कार्यक्रम विकसित होता है और परिपक्व होता है, इसके डिजाइन और कार्यान्वयन को परिष्कृत करने के लिए निरंतर अनुसंधान और मूल्यांकन आवश्यक होगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह भारत में शिक्षक शिक्षा को बदलने के अपने वादे को पूरा करता है।

संदर्भ

ए.एस.ई.आर. सेंटर. 2019. *वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट 2018*. ए.एस.ई.आर. सेंटर, नई दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. 2022. *भारत में शिक्षक शिक्षा पर स्थिति रिपोर्ट 2021–22*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

कुमार, ए. 2022. नियामक ढाँचे और आई.टी.ई.पी. कार्यान्वयन— नौकरशाही जटिलताओं का नेविगेशन. *शैक्षिक नीति विश्लेषण*. 14(2), पृ.सं. 67–83.

कुमार, के. और पी. सारंगपाणि, 2021. भारत में शिक्षक शिक्षा सुधार— ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और समकालीन चुनौतियाँ. *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक*. 56(35), पृ.सं. 45–52.

गांधी, एम. 2023. आई.टी.ई.पी. के लिए संस्थागत तैयारी— पाँच उच्च शिक्षा संस्थानों की एक केस स्टडी. यूनिवर्सिटी न्यूज. 61(12), पृ.सं. 15–22.

डार्लिंग-हैमंड, एल. 2017. दुनिया भर में शिक्षक शिक्षा— हम अंतर्राष्ट्रीय अभ्यास से क्या सीख सकते हैं? *यूरोपीय शिक्षक शिक्षा जर्नल*. 40(3), पृ.सं. 291–309.

पांडा, एस. 2022. शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता आयाम— आई.टी.ई.पी. के लिए निहितार्थ. *भारतीय शिक्षा जर्नल*. 47(4), पृ.सं. 22–37.

भाटिया, के. 2023. शिक्षक शिक्षा में प्रौद्योगिकी एकीकरण— आई.टी.ई.पी. कार्यान्वयन का परीक्षण. *भारत में शैक्षिक प्रौद्योगिकी जर्नल*. 11(2), पृ.सं. 45–61.

राजपूत, एस. और के. वालिया. 2021. शिक्षक शिक्षा में सिद्धांत-अभ्यास एकीकरण— आई.टी.ई.पी. दृष्टिकोण. *शिक्षक शिक्षा और अनुसंधान जर्नल*. 16(1), पृ.सं. 34–49.

रामचंद्रन, वी. 2021. शिक्षक शिक्षा में विखंडन— ऐतिहासिक जड़ें और समकालीन चुनौतियाँ. *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक*. 56(22), पृ.सं. 37–43.

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद. 2021. *आई.टी.ई.पी. पाठ्यक्रम ढाँचा 2021*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2018. *राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2017— सारांश रिपोर्ट*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली.

यादव, एस. 2022. शिक्षक शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण— आई.टी.ई.पी. कार्यान्वयन से प्रारंभिक अंतर्दृष्टि. *समकालीन शिक्षा संवाद*. 19(2), पृ.सं. 156–172.

वर्मा आयोग रिपोर्ट. 2012. *भारत में शिक्षक शिक्षा का दृष्टिकोण— गुणवत्ता और नियामक परिप्रेक्ष्य*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय. नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली

———. 2022. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. के लिए कार्यान्वयन दिशानिर्देश— शिक्षक शिक्षा पर फोकस*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

———. 2023. *शिक्षक शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग— अवसर और चुनौतियाँ*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

सारंगपाणि, पी. 2023. शिक्षक शिक्षा सुधार के लिए पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण— आई.टी.ई.पी. से परे. *समकालीन शिक्षा संवाद*. 20(1), पृ.सं. 5–22.